

१ समविस्फु॥ गार्॥ ध्यावाः ॥ १२॥

गानहं खं हं ॥ डो वडसुअजानशंशं ॥ डो वडकालानननकहं ॥ हं कानका वृदिण कानः
समिकपधवगि गान ॥ आदिविघ्नानहदयकी लयं ॥ २ ॥ घघघाटय २ सर्वदृष्टानहं
रुह ॥ डो किनय २ सर्वपाया नहं रुह ॥ डो वड किल वडधन आहाययमिसर्वविप्रविनाय
कानां कायवाक्यी लवडान किनय २ हं रुह ॥ डो वड मफल किल आकाठय २ हं रुह ॥
॥ मिनी विघ्नं रोवय ॥ कक १ हं रुह दय २ हं काल नमि रिकु गड थं कला अक निष उवन

आ २

गलागुगुलु अनादिसिद्धि श्री वडसंवल रुगवंकं रुगव कि समायन समा ७ लययमः
॥ गगो हं वी डन भिमाला रिक कपु हान वड आ का गद २ ग दृष्टा अरिम विमरि सं पय
समकु समय मय लं पवि ॥ समल नि कृत्य मनामयि रिक १ पडा द विरि ॥ पडा य ग ३ ॥
डो वड हं रुह वड कप वस का वाय पाय अखं आव मन पा कृ ध प रिक सा हा ॥ लं रुव गः
य ॥ ३ ॥ डो वं हं ॥ पथ न्या ग ॥ डो वड हं रुह वड क हं रुह ॥ किनी डाल सं व नं सा ॥

हम अंकीं ४ हं हं हं हं हं ॥ अं हं हं हं हं हं ॥ किनी य व ड व हं नी य व ड व ने ना न नी य हं ॥
हं हं हं हं हं ॥ दा न ॥ अं हं किनी य हं हं हं ॥ अं लाम हं हं हं ॥ अं व हं हं हं हं ॥ अं न पि
नी य हं हं हं ॥ अं वा श्री विरु म ग हा ॥ हं हं हं ॥ ४ ॥ अं नो वा ॥ ०० ॥ अं का का ॥ अं हं हं हं
उ लु का ॥ अं हं हं ॥ अं अना ॥ अं हं हं ॥ अं भू क ना ॥ अं हं हं ॥ अं य मे डा किनी हं हं ॥ अं
य म ड नी हं हं ॥ अं य म ड डी हं हं ॥ अं य म म थ नी हं हं ॥ अं व डी य हा य सा हा ॥ ॥

अं ग हं हं ला य सा हा ॥ ॥

अं क ला क ना य सा हा ॥ अं क नं क रं न वा य सा हा ॥ अं अ हं हं हा सा य सा हा ॥ अं नं श्रि व न हं
ना स ना य सा हा ॥ अं धा ला भ का ना य सा हा ॥ अं किलि कि ना य सा हा ॥ ५ ॥ वा य ॥ अं य हा ल
पू जा ॥ अं द ग ना म्हा ॥ ६ ॥ अं व ड वि न हं ॥ अं व ड वं ॥ अं गं ॥ अं व ड मृ दं रा फी ॥ अं व ड मू
नू ड अ ॥ अं व ड ला ॥ अं हं ॥ अं व ड सा ला गं ॥ अं व ड री थ फी ॥ अं व ड नू थ न ॥ अं व ड पू थ
हं ॥ अं व ड भू थ गं ॥ अं व डं व ला कि र फी ॥ अं व ड गं थ व ड नू ॥ अं व भ व ड नू ॥ अं थ ॥
अं व डं द र्शन हं

नवकुंभी ॥ अविज्ञानमिह ॥ अंधमंधाकुवडहं ॥ पञ्चवाद नकुमि ॥ सूर्यरुहानसदा
हजगदथपमधकं चिंतामनी निवारुंती संववनं नभासुग ॥ व्याफविलमहाहानं संघमिनिस्
दाथिकं कृपाकादमहाबाहुंती संववनं नभासुग ॥ ७ ॥ मरुगर्पन ॥ अनेभासुगवगवी नवी
प्रथवायहं हट् ॥ नभासुहात्यामिसुनिहाय ॥ अनेभासुगामकूटाकूटायनमाड एंकलागरी
खनमूखाय ॥ नभासुहट् रुडहासुवाथ ॥ नभायनसुपाभयेकभूलखडागभावि ॥ ८ ॥ नभाया

पुत्रमविनधवाय नभासुहाधुमांधकावायवपूषाथहं हट् ॥ ९ ॥ नभापापदभनां ॥
कृताकाचिकमनूमादिकमघमखिलनिर्हिगदधानाप्रतिदभयामिपूवत ॥ पूनसंववनं विन
॥ अथानकरवज्जिभारुमजिनसूगसंरुगानिकभलानिजनूमादिकानिवा ॥ अथसंम्यक्विना
मयामिघडिननवादीतिरयंभलनयागगा ॥ सिस्वरीहावनवा ॥ अथिरुंविन ॥ अथनूरुन
मार्गकथासंवल्यादिथाग ॥ अथमसमाधिडागा ॥ १० ॥ नभासेतीकनूधामूदिगापकावड

ब्रह्मविद्यानां शिवयोगः ॥ ओं स्वस्ति नमस्तुभ्यं सर्व धर्मा स्वस्ति नमस्तुभ्यं ॥ गंगा अरिषिक ॥ ओं अरिषि
कृतमां सर्व विनयागिनः ॥ यथा हि जायमानसनापि तां सर्वगं आगतां कथां हं प्रापयिष्या
मिह हस्तुदिव्य नवाचिनां ॥ ओं आ सर्वगं आगतां अरिषिक समधिपदं ॥ १० ॥ गंगामकूट ॥
अरिषिक महावज्रने धातुकं नमस्कृतं यथा कं पूजनार्थं यमकूटं पंचकूटं ह
वं ॥ ओं वज्रध्वजं अरिषिचक्रं ॥ ओं वज्रवज्रिणी अरिषिचक्रं ॥ ओं वज्रवज्रिणी अरि
ओं सर्ववृद्धं जमनिमहा मकूटाक्षी चक्रं ॥

विंशतां ॥ ओं धर्मवज्रिणी अरिषिचक्रं ॥ ओं कर्मवज्रिणी अरिषिचक्रं ॥ मकूटं ॥ ओं
अद्यारिषिक त्वमसि वृद्धे वज्रनामा अरिषिक ॥ ओं दं गं सर्ववृद्धं लंगुलं वज्रसिद्धय ॥
वज्र ॥ वज्राधिपतिस्मरिषिचक्रं मित्रिषु वज्रसमयस्त्रं हा ॥ वज्रध्वजं ॥ यद्युधं वज्र
मल्लमरिषिचक्रं मित्रवज्रनामा अरिषिक ॥ ४६ ॥ हनूक वज्रनामकं आगतां रुद्रवस्त्रं ॥ नाम ॥
रुद्रादि ॥ आपूर्ववृद्धाकर्षनयायादियूष्यन्यामी ॥ यत्नमयदा वज्रालाभापशुवाद्यः ॥

नमुनि ॥ कथं ॥ ॐ किमधुलादिमहायागद्विक्रियसमाधि ॥ कायजाग ॥ ११ ॥ अथाः
पूयः सां यः सुक्रिये ॥ ॐ किजायथाग ॥ १२ ॥ ककावलिखवना ॥ यं कावनवायम
धुलं कद्वय वि आकाशक नडे मधु प्रिय वृत्तिकाय विभुक्तय मराजनं विविध ॥ कुरु कुरु
दिय विप्र विरं वं आं किं खं हूं सां मां यां तां वं का न जा न य वा मृ ग य क्प द्विप निष्ठा य वा यूप
सि कुरु लिगा प्रि सा य वि लि न ना मा क ना दिकं मरुति न वा दि गं रा नू व र्हे क ड व नू यं य ला क

भक्तद्वय विद्या ल द व र्हे वि क रि मा जां क वि ता ध मू ख मृ क म य धु क्ख र वां ग क द्वा य वि ली नः
मि श्री कृ य पा वा न स द भ स मि अ यं न ॥ मी नी रू कं वि वि लु क द्व य वि ज्ञं आ हूं ॐ कुरु न यं यं
दृ ष्टा क ड भ म य भ द भ दि ग व र्ही न्या वि न वि न्ध वि ह्ना ना क मा नि य क र्ते वा क न यूप वि ष्ट विः
चिं क य ग ॥ जं आ हूं व वि नू वि ष्टा न ॥ अथा यः यं सां य सु क क र्थं ॥ १३ ॥ कका अलि का
वि य वि धे ग व द्ध शु र्थ क न द्ध यां ग र्ग गं दृ ष्टा ॥ जं १ न्या न्या नू ग ता स र्व भ र्मा ४ जं य न स्य वा नू गः



[illegible]

विश्वं हूं रुद्र रुद्र स्वाहा ॥ १५ ॥ अखरखादि सर्वयक्रनाकसखगपठयिमावात्मा जाय
मात्रा किन्नादयश्च ०० मंत्रनिगूढ लुसमयनक्रलुसमयसिद्धिंप्रयच्छु यथेवयथस्थं
उक्तार्थपिवर्थस्तिष्ठार्थमाशिकमर्धमसर्वसत्त्वानांसर्वाका नकया सत्सखं पवृद्धयसाहाका
हवल्मुद्गां रुद्र रुद्र स्वाहा ॥ १६ ॥ यलाघं मुक्ति कर्ष्य द्या स घं मग था पिः पूजा मजी के थ
॥ १७ ॥ धनद व पूजा ॥ स्वां ॥ स्तुता व पु चा त्या दि ॥ धूप ॥ ओं रु ग व न् श्री नू मू क सर्व विः

या वाङ्मनमाशुभकर्तुमिच्छामि गताथमथुलंकनूशात्मकं सिष्यानामनूकं यार्थयूषाकंपू
कनात्रकभरकश्चमरुगवन्पुगादं कर्तुमर्ह्यः॥ समन्वाहर्तुमांब्रह्मकागदर्थक्रियाः
र्थदारुलसुवाधिसखाश्चजाजान्यामकुदवगाहवगाहाकयालाश्चरुगासंवाधिसना
माधनारिवगाः सखायकविगुक्कजवक्रुवः॥ नमूकनामा वार्यहयथाशकुपवाचरः॥ न
नूकंयामयादायवक्रुधूपस्यगलेधुलेसहिगांसर्वसानिष्कं कर्तुमर्ह्यवक्रुधूपनिर्याकया

मिवक्रुधूपसाहा॥ १८ ॥ नूयमसरुलंकर्मसरुलकिविगंजमसमयंसमयदवानारुवगा
हनसंसयत्रुविवर्होरुविष्यामिवाधिविरेकचरुगः॥ गथागगाकुल्लयिगिममायायनसम
य॥ नूयममदिवमाहृययहामहृयनरुनसन्निपाथरुवहृयसर्ववृद्धं निमलुनागुनिमलु
न॥ १९ ॥ दवलोन्॥ उंकिंलगनंरुवसत्तहृद्विस्त्रिगस्यसर्वलिक्कस्यववधर्मकूवाधि
यम्भनिस्त्रयदायसत्तहनकस्यमहाशुखात्मकस्यकलंगंरुवकुगयनमारुहिवके॥ उं सर्व

१२
गथागमवैश्वदेवैः ॥ कथाहिजागमायथागथाहं स्नाययिष्यामि शुद्धदिव्यनवादिनां ॥ २०
पुनर्विन्ध्यसमाधर्माः शुद्धाः कनादिनाः शुद्धाः कनादिनाः शुद्धाः कनादिनाः ॥ २०
॥ २१ ॥ अगमसिद्धाः ॥ २१ ॥ अगमसिद्धाः ॥ २१ ॥ अगमसिद्धाः ॥ २१ ॥ अगमसिद्धाः ॥ २१ ॥
यंपुनर्विन्ध्यसमाधर्माः शुद्धाः कनादिनाः शुद्धाः कनादिनाः शुद्धाः कनादिनाः ॥ २२ ॥ अगमसिद्धाः ॥ २२ ॥

दिनमात्रपूजाभयसमूहसूत्रं दत्तं ॥ अगमसिद्धाः ॥ २३ ॥ अगमसिद्धाः ॥ २३ ॥ अगमसिद्धाः ॥ २३ ॥
स्वाहा ॥ २३ ॥ अगमसिद्धाः ॥ २३ ॥ अगमसिद्धाः ॥ २३ ॥ अगमसिद्धाः ॥ २३ ॥ अगमसिद्धाः ॥ २३ ॥
रूपाणि सर्वानि भद्राणि भवन्ति सर्वानि भद्राणि भवन्ति सर्वानि भद्राणि भवन्ति सर्वानि भद्राणि भवन्ति ॥ २४ ॥
सर्वानि भद्राणि भवन्ति सर्वानि भद्राणि भवन्ति सर्वानि भद्राणि भवन्ति सर्वानि भद्राणि भवन्ति ॥ २४ ॥
यथागमपूजाभयसमूहसूत्रं दत्तं ॥ अगमसिद्धाः ॥ २५ ॥ अगमसिद्धाः ॥ २५ ॥ अगमसिद्धाः ॥ २५ ॥

यमागमः सर्वसत्त्वा सर्वधा सर्वरूपा च कवत्वा सर्ववेसु खिनसु सर्वसुखिनामयाः सः
 वरिडा नियम्युः साकचित्थायमागमजा निह रूपा निस्समार्गेता निहिता निरुमां वथ
 मां कविकं कूर्च उमेयीसु रंगं पजा सुदिवा वलाशो वचनकुधर्मा ॥ २४ ॥ नेवीयस
 य ॥ अनेव यपुकि गृह्णतु खाद्य रूपां धिक्पुरु महायानसमूयगं वसुवर्क समुच्चि गंशः
 वरुनेव यखाहा ॥ २५ ॥ अना ॥ अनेभा रूपा वरुवी ववी वसु नायत्यादि ॥ २६ ॥

मग ॥ नेगहि नामा वरु च लको खान नाधिपा वचिगया दयभा हानपदिया हकभा हजाल
 ऊदिपमाना वचयनिकगु ॥ अ ॥ वरु दिथखाहा ॥ २७ ॥ अपृथ न्या ॥ अ ॥ श्री वरु दिह
 वरु कर्क हट्ट ॥ २८ ॥ गा यजाय ॥ अ ॥ धर्मा ख्यादि ॥ २९ ॥ दक्रनाः कियव ॥ अने
 भारु गवमं श्री कृमानरु गा यवा धिसत्त्वा यमहा सत्त्वा यमहा कानूनि काय ऊजमान
 सव कार्थगा इलद क्रना सयदाषयगू ॥ ३० ॥ नूका वमूख ॥ अ ॥ नूका वमूख सर्व ध

५४
ममि नोमा यं नृत्यं नत्वा ज्ञानं हं रूपा सा ॥ ८० ॥ वाक्य पूजा ॥ मधुलं चित्तः किं न
रुक्मिणी या यथा ८० ॥ मम कल ॥ जिवन्मुक्ते समय मनूपा न यवज्जसत्वं न पः
मि श्रु दृष्टा मरुव सु गाव्या मरुव सु याथा मरुव नूनल क मरुव सर्व सिद्धि म प्रह्व सर्व
कर्मसूत्र म विरुध्य यं क नूनं हं हं हं हं हं गव नूनं क था ग र व ड मा मि मूत्र व जी रु
वमहा समय सत्वं न ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ य

नूकं मभि कं नार्थं क त्त्व क उ म हं मि क नु म हं क सं व द्वा द व गा स गा व य उ ज्ञा या सा
क या ला अ मा नि रु गा वि द्वि क या ग म कि स कि थ प रि सि थ द न य क १ नू प्र हा य क म म
१ य त्त्व कं दू क मं कि कि त्त्व या मू द्ध वि या पू न १ य त्त्व क का य उं पा यं य त्त्व कं वा क उं या
यं य त्त्व कं वि रु ज या य म त्त्व वी द म या म हं ॥ क र व यं क त्त्व या ना थ यदि उ ज्ञा सि द्दि दि ना व
क उ द व गा स र्व क नू धी य मि मा वि न क नू दान य नी ग म कि स कि थ स र्व क ॥ न मा मु क व

इन्द्रनक्रगवनायनममुगसत्यपकासमूनसत्यपकिष्ठा यपजायभावस्य सर्ववर्मा
सहलाहवकुवक्रकमध्व ॥ ६०३ ॥ अग्निर्वदि ॥ ओं क्रीं वसुर्वसुत्वा र्थसिद्धिं दः
त्वा यथानृगध्वं वृद्धि विखययूनला यगमनाय च ॥ ६०४ ॥ ओं वज्रमधुलं मे ॥
विमर्जि मे ॥ ६०५ ॥ वगपूजा ॥ दक्रनाय पूजा ॥ अगहन ॥ समया वक्र ॥ गनवक्र
॥ ६०६ ॥ ॥ ॥ निदवपूजा वीदिसमाप ॥ ६०७ ॥ ॥ सैवगुल ५३ मिर्वे भावक

[illegible]



ॐ नमो श्रीवज्रसूत्रायः॥
कलगाधविवरः मयाधिया दृष्टुं ध्ये
ॐ







و هو في سنة ١٢١٥